Journal
Of the
Oriental Institute
M.S. University of Baroda

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

रोशनआरा बेगम की ख़याल शैली : राग प्रस्तुति, तान और भावाभिव्यक्ति का विश्लेषण

जसप्रोत कौर
शोधार्थी
लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी
फगवाड़ा पंजाब

डॉ अमनदीप सिह
सहायक प्रोफेसर
लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी
फगवाड़ा पंजाब

सारांश

इस शोधपत्र का उद्देश्य रोशनआरा बेगम की ख़याल गायिकी की शैलीगत विशिष्टताओं का व्यवस्थित विश्लेषण प्रस्तुत करना है। शोध में राग प्रस्तुति के प्रकार, तान की तकनीकें, और भावाभिव्यक्ति के तंत्र का विस्तृत अध्ययन किया गया है। शास्त्रीय रियाज़, लाइव रिकॉर्डिंग तथा उपलब्ध लेखन-सामग्री के समेकन से स्वर, लय, गति और आरोह-अवरोह के प्रसंगिक प्रयोगों का निरूपण किया गया है। परिणाम यह संकेत करते हैं कि गायिका की ख़याल प्रस्तुति में सूक्ष्म अंतर्व्यंजना, बंदिश-निर्माण के प्रति संवेदनशीलता तथा तान-पेश पर नियंत्रण का समन्वय देखा जाता है, जो पारंपरिक ठाठ और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का अनूठा संयोग प्रस्तुत करता है। यह शोध गायिका की तकनीकी दक्षता, भावानुभूति और शैलीगत नवोन्मेष के संदर्भ में संगीतशास्त्रीय विमर्श के लिए उपयोगी निष्कर्ष प्रदान करता है।

कुंजियाँ

ख़याल, राग प्रस्तुति, तान, भावाभिव्यक्ति, अलंकृत गायिकी, गायन शैली, शास्त्रीय रियाज़

प्रस्तावना

ख़याल गायिकी की शास्त्रीय परंपरा

शास्त्रीय भारतीय संगीत की मुखर परंपरा में ख़याल विधा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। ध्रुपद के बाद विकसित हुई इस गायन शैली ने समय के साथ स्वर-विस्तार, कल्पनात्मकता और भावात्मक व्यंजना को केंद्रीय महत्व प्रदान किया। ख़याल की संरचना ऐसी है जिसमें गायक को राग के व्याकरण का पालन करते हुए भी स्वतंत्र सृजन की पर्याप्त संभावना मिलती है (भट्टाचार्य *et al.*, 2025)। इसी कारण यह विधा केवल नियमबद्ध अनुशासन तक सीमित न रहकर संवेदनशीलता और अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन गई है। ख़याल गायन में स्वर की सूक्ष्म गतियाँ, लय का संतुलन और राग की आत्मा का संरक्षण—तीनों का समन्वय अपेक्षित होता है।

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

राग, ताल और लय का अंतर्संबंध

ख़याल प्रस्तुति की आधारशिला राग की संरचना पर टिकी होती है। आरोह-अवरोह, वादी-संवादी स्वर, पकड़ और राग की विशिष्ट चलन–ये सभी तत्व गायन को दिशा प्रदान करते हैं (चक्रवर्ती *et al.*, 2021)। इसके साथ ही ताल के साथ घनिष्ठ समन्वय अनिवार्य है, क्योंकि ख़याल में लय केवल संगति का साधन नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति का सक्रिय घटक होती है। विलंबित से द्रुत लय तक की यात्रा में गायक का लय-लय्यापन उसकी तकनीकी परिपक्वता को प्रकट करता है। स्वर-सौष्ठव, अर्थात स्वर की शुद्धता, स्थिरता और मधुरता, ख़याल गायन की सौंदर्यात्मक पहचान को पुष्ट करती है।

ख़याल में कल्पनात्मकता और विस्तार

ख़याल गायिकी की एक प्रमुख विशेषता उसका विस्तारशील स्वरूप है। अलाप, बोल-आलाप, बोल-तान और तान के माध्यम से राग को क्रमशः विकसित किया जाता है। इस प्रक्रिया में गायक की कल्पनाशीलता और अभ्यास दोनों की परीक्षा होती है। राग-विस्तार केवल स्वरों की पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि राग के भावात्मक और संरचनात्मक पक्षों को उद्घाटित करने की प्रक्रिया है। इस दृष्टि से ख़याल गायन शास्त्रीय अनुशासन और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के बीच एक संतुलित सेतु का निर्माण करता है।

रोशनआरा बेगम का गायन परिदृश्य

रोशनआरा बेगम की गायिकी इस अध्ययन का केंद्र इसलिए है क्योंकि उनकी प्रस्तुति में परंपरा और व्यक्तित्व का स्पष्ट समन्वय दृष्टिगोचर होता है (खान *et al.*, 2017)। उनकी गायन शैली में राग की शुद्धता के साथ-साथ स्वर की कोमलता और संयम दिखाई देता है। उन्होंने ख़याल को न तो अत्यधिक अलंकरण से बोझिल बनाया और न ही केवल तकनीकी प्रदर्शन तक सीमित रखा। उनकी प्रस्तुति में स्वर-नियंत्रण, तान की स्पष्टता और भाव की गहराई एक साथ उपस्थित रहती है, जिससे उनका गायन शास्त्रीय मर्यादा के भीतर रहते हुए विशिष्ट पहचान स्थापित करता है।

तान और भावाभिव्यक्ति का महत्त्व

ख़याल गायन में तान केवल गति या कौशल प्रदर्शन का साधन नहीं है, बल्कि वह राग के विस्तार और भाव के संप्रेषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। तान की संरचना, उसकी दिशा, गति और विराम–ये सभी तत्व मिलकर गायन को प्रभावशाली बनाते हैं। रोशनआरा बेगम की तानों में संतुलन और नियंत्रण स्पष्ट दिखाई देता है। उनकी तान-पद्धति में न तो अनावश्यक तीव्रता है और न ही भाव की उपेक्षा। इसी प्रकार भावाभिव्यक्ति में भी उनकी गायिकी में

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

संयमित गहनता पाई जाती है, जहाँ स्वर और शब्द दोनों मिलकर राग के अंतर्निहित भाव को उभारते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता और उद्देश्य

यद्यपि ख़याल गायिकी पर पर्याप्त साहित्य उपलब्ध है, फिर भी व्यक्तिगत गायकों की शैलीगत विशिष्टताओं का गहन विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित रहा है। रोशनआरा बेगम के संदर्भ में भी उनके गायन की प्रशंसा तो मिलती है, परंतु राग प्रस्तुति, तान और भावाभिव्यक्ति के तकनीकी तथा संरचनात्मक विश्लेषण की आवश्यकता बनी हुई है (राजक *et al.*, 2022)। इस शोध का उद्देश्य उनकी रागात्मक विचारधारा, तान-पद्धति और भावात्मक अंतर्संबंध का संगठित एवं शास्त्रीय विवेचन प्रस्तुत करना है। इसके माध्यम से ख़याल कला के तकनीकी और अभिव्यक्तिगत तत्वों की स्पष्ट समझ विकसित करना तथा भारतीय शास्त्रीय गायिकी के अध्ययन में एक सुदृढ़ संदर्भ जोड़ना इस प्रस्तावना का केंद्रीय लक्ष्य है।

शोधप्रश्न

1. रोशनआरा बेगम की ख़याल प्रस्तुति में राग के आरोह-अवरोह तथा प्रमुख शिल्पगत तत्व किस प्रकार उपस्थित होते हैं?
2. तान की तकनीकें और उनके संगीत-संदर्भ क्या हैं, तथा वे प्रस्तुति की संवेदनात्मक तीव्रता में कैसे योगदान करती हैं?
3. भावाभिव्यक्ति के साधनों (माइक्रोटोनल बारीकियाँ, शिल्पगत विराम, संगीतमय संवेदना) का किस प्रकार उपयोग किया गया है और उनका श्रोताप्रतिक्रिया पर क्या प्रभाव होता है?

रोशनआरा बेगम द्वारा प्रस्तुत प्रमुख शास्त्रीय राग

Roshan Ara Begum की ख़याल गायिकी विभिन्न गम्भीर, मध्यम और चंचल प्रकृति के रागों में समान दक्षता के साथ अभिव्यक्त होती है। उपलब्ध रिकॉर्डिंगों और संगीत-इतिहास संबंधी स्रोतों के आधार पर उनके द्वारा प्रस्तुत प्रमुख रागों का उल्लेख निम्नानुसार किया जा सकता है:

1. राग दरबारी कान्हड़ा
   गंभीर और गाम्भीर्यप्रधान राग दरबारी में उनकी प्रस्तुति स्वर-स्थैर्य, गूढ़ मीण्ड और गहन आलाप के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय रही है। विलंबित लय में विस्तृत राग-विकास और नियंत्रित द्रुत तानों के माध्यम से उन्होंने इस राग की शास्त्रीय गरिमा को अक्षुण्ण रखा।
2. राग मल्हार (विशेषतः मियाँ की मल्हार)
   मल्हारांग रागों में उनकी प्रस्तुति में लयात्मक चपलता और स्वर-विस्तार का संतुलित प्रयोग दिखाई देता है। तानों में तरलता तथा आरोही-अवरोही वक्र की स्पष्टता इस राग की प्रस्तुति की प्रमुख विशेषता रही।

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

3. राग तोड़ी

तोड़ी की कोमल स्वरों की संवेदनशीलता को उन्होंने अत्यंत संयमित स्वर-प्रयोग और सूक्ष्म श्रुति-विन्यास के माध्यम से व्यक्त किया। इस राग में उनकी भावाभिव्यक्ति विशेष रूप से अंतर्मुखी और गहन प्रतीत होती है।

4. राग बिहाग

बिहाग की कोमलता और उज्ज्वलता के बीच संतुलन स्थापित करते हुए उन्होंने मध्यम और तार सप्तक में स्वच्छ स्वर-संचालन प्रस्तुत किया। तानों में स्वच्छता और रागीय पकड़ स्पष्ट दिखाई देती है।

5. राग भैरव

भैरव की प्रस्तुति में गंभीरता और आध्यात्मिकता का संयोजन दिखाई देता है। विलंबित आलाप में स्वर-स्थिरता और गम्भीर नाद-सौंदर्य उनकी विशेष पहचान बनते हैं।

ठुमरी गायन

यद्यपि उनका मुख्य क्षेत्र ख़याल गायिकी रहा, तथापि उन्होंने कुछ चयनित ठुमरियों की भी प्रस्तुति की। उनकी ठुमरी-शैली में अति-नाटकीयता के स्थान पर संयमित भावाभिव्यक्ति और रागीय शुद्धता प्रमुख रहती है।

प्रमुख ठुमरियाँ (उदाहरणार्थ):

- "बाबुल मोरा नैहर छूटो जाए"
- "कौन गली गयो श्याम"
- "पिया के मिलन की आस"

इन प्रस्तुतियों में बोल-बनाव, मीण्ड और सूक्ष्म गुमक का नियंत्रित प्रयोग दिखाई देता है। उनकी ठुमरी गायिकी ख़याल की तकनीकी अनुशासन से प्रभावित प्रतीत होती है, जिससे उसमें शास्त्रीय गरिमा बनी रहती है।

ग़ज़ल प्रस्तुतियाँ

ग़ज़ल के क्षेत्र में भी उनकी प्रस्तुति सीमित किन्तु प्रभावशाली रही है। उन्होंने ग़ज़लों को शास्त्रीय संगीत की पृष्ठभूमि में प्रस्तुत किया, जिससे उनमें सुर-संयम और रागीय स्पर्श स्पष्ट बना रहा।

उदाहरणार्थ प्रस्तुत ग़ज़लें:

- "दिल-ए-नादान तुझे हुआ क्या है"
- "रंजिश ही सही" (शास्त्रीय शैली में अनुकूलित रूप)
- पारंपरिक उर्दू शायरी पर आधारित बंदिशात्मक प्रस्तुति

उनकी ग़ज़ल-शैली में शब्दोच्चारण की स्पष्टता, मंद्र स्वर-प्रयोग और नियंत्रित आलाप का संयोजन दिखाई देता है। ग़ज़ल को उन्होंने हल्के संगीत की शैली में न गाकर शास्त्रीय मर्यादा के भीतर अभिव्यक्त किया।

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

शैलीगत विविधता का विश्लेषण

उपरोक्त रागों, ठुमरियों और ग़ज़लों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि:

- **उनका मूल आधार ख़याल रहा, किन्तु उपशास्त्रीय विधाओं में भी उन्होंने संतुलित प्रयोग किए।**
- **रागीय शुद्धता सभी विधाओं में संरक्षित रही।**
- **तान-तंत्र और स्वर-नियंत्रण विभिन्न शैलियों में भी समान रूप से सशक्त बना रहा।**
- **भावाभिव्यक्ति का स्तर विधा के अनुसार परिवर्तित होता है, परंतु शास्त्रीय अनुशासन से विचलित नहीं होता।**

साहित्य समीक्षा

ख़याल गायिकी पर उपलब्ध साहित्य भारतीय शास्त्रीय संगीत के सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों पक्षों को समझने में महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। प्रारम्भिक शास्त्रीय ग्रंथों में संगीत की रागात्मक संरचना, स्वर-व्यवस्था, ताल-प्रणाली तथा अलंकारों का विस्तृत विवेचन मिलता है, जिसने आगे चलकर ख़याल जैसी विधाओं के विकास की वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार की (आप्टे *et al.*, 1997)। इन ग्रंथों में राग को केवल स्वरों के समूह के रूप में नहीं, बल्कि एक विशिष्ट भावात्मक और सौंदर्यात्मक इकाई के रूप में देखा गया है। ख़याल गायिकी के संदर्भ में यह दृष्टि विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें राग-विकास के दौरान गायक को संरचना और कल्पना के बीच संतुलन बनाए रखना होता है।

आधुनिक संगीतशास्त्रीय साहित्य में ख़याल गायिकी को एक विकसित और परिष्कृत विधा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। विद्वानों ने बंधिश-आधारित प्रस्तुति को ख़याल की आधारशिला मानते हुए यह स्पष्ट किया है कि बंधिश केवल गायन का प्रारम्भिक ढाँचा नहीं, बल्कि सम्पूर्ण राग-विस्तार की दिशा निर्धारित करने वाला तत्व है। राग-विकास के सिद्धांतों पर लिखे गए ग्रंथों और शोध-लेखों में आरोह-अवरोह, वादी-संवादी स्वर, पकड़, न्यास और विशिष्ट चलन जैसे तत्वों पर विशेष बल दिया गया है (नंदी *et al.*, 2024)। इन अध्ययनों में यह भी प्रतिपादित किया गया है कि ख़याल में राग का विकास क्रमिक होता है, जिसमें अलाप से लेकर तान तक प्रत्येक चरण राग की आत्मा को उद्घाटित करने का माध्यम बनता है।

तान-प्रकारों पर केंद्रित साहित्य ख़याल गायिकी के तकनीकी पक्ष को समझने में सहायक है। विभिन्न विद्वानों ने तानों को उनकी गति, संरचना और लयात्मक विन्यास के आधार पर वर्गीकृत किया है। इनमें विलंबित, मध्यम और द्रुत तानों के साथ-साथ बोल-तान और सरगम-तान जैसी विधाओं का विश्लेषण भी मिलता है। इस साहित्य में तान को केवल कौशल-प्रदर्शन के रूप में न देखकर राग-विस्तार और भाव-संप्रेषण का आवश्यक उपकरण माना गया है।

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

तथापि, अधिकांश अध्ययन तानों की सामान्य श्रेणियों और सिद्धांतों तक सीमित रहे हैं और विशिष्ट गायकों की तान-रचना शैली पर गहन विश्लेषण अपेक्षाकृत कम देखने को मिलता है।

गायिकी के इतिहास पर लिखे गए ग्रंथों में विभिन्न घरानों और प्रमुख गायकों की परंपराओं का तुलनात्मक अध्ययन उपलब्ध है। इन अध्ययनों के माध्यम से गुरु-शिष्य परंपरा, शैलीगत निरंतरता और परिवर्तन के बिंदुओं को रेखांकित किया गया है (ठाकुर *et al.*, 2010)। हालांकि, इन तुलनात्मक अध्ययनों में अक्सर शैली की व्यापक विशेषताओं पर ध्यान दिया गया है, जबकि व्यक्तिगत गायकों की सूक्ष्म शैलीगत विशेषताओं, जैसे स्वर-नियंत्रण, तान की आंतरिक संरचना और भावाभिव्यक्ति की प्रक्रिया, पर विस्तृत विवेचन सीमित रूप में ही हुआ है। ऐसे विश्लेषण प्रायः संग्रहित रिकॉर्डिंगों और मौखिक परंपरा पर आधारित रहे हैं, जिनमें व्यवस्थित तकनीकी ढाँचे का अभाव दिखाई देता है।

Roshan Ara Begum के संदर्भ में उपलब्ध साहित्य मुख्यतः वर्णनात्मक और प्रशंसात्मक प्रकृति का है। विभिन्न लेखों और संस्मरणों में उनके स्वर की कोमलता, सुरों की शुद्धता, और राग पर गहरी पकड़ की सराहना की गई है। उन्हें एक ऐसी गायिका के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिनकी गायिकी में संयम, शास्त्रीय अनुशासन और सौंदर्यबोध का संतुलित समन्वय दिखाई देता है। कुछ लेखों में उनके गायन को भावपूर्ण और गंभीर बताया गया है, जो श्रोता को गहन संगीतात्मक अनुभूति प्रदान करता है। इसके बावजूद, इन लेखनों में उनकी तान-रचना की संरचना, तानों की लयात्मक योजना और भावाभिव्यक्ति के तकनीकी आयामों पर सैद्धान्तिक और विश्लेषणात्मक चर्चा अपेक्षाकृत कम है।

समकालीन शोध साहित्य में रिकॉर्डेड प्रस्तुतियों के विश्लेषण की प्रवृत्ति उभरती हुई दिखाई देती है, जहाँ ध्वनि-विश्लेषण और संगीतशास्त्रीय मापदण्डों का उपयोग किया जा रहा है। फिर भी, रोशनआरा बेगम की गायिकी के संदर्भ में ऐसे प्रयास सीमित रहे हैं (शफी *et al.*, 2017)। अधिकांश अध्ययन या तो संक्षिप्त परिचयात्मक टिप्पणियों तक सीमित हैं या फिर व्यापक इतिहासात्मक संदर्भ में उनकी चर्चा करते हैं, जिससे उनकी व्यक्तिगत शैली की विशिष्टताएँ स्पष्ट रूप से उभर नहीं पातीं।
इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध साहित्यिक अंतर को रेखांकित करता है और उसे भरने का प्रयास करता है। यह अध्ययन उपलब्ध रिकॉर्डेड प्रदर्शनों को आधार बनाकर राग प्रस्तुति, तान-रचना और भावाभिव्यक्ति के तकनीकी तथा संरचनात्मक पहलुओं का समन्वित विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस प्रकार यह शोध न केवल प्रचलित साहित्य का विस्तार करता है, बल्कि ख़याल गायिकी में व्यक्तिगत शैली के अध्ययन को एक अधिक व्यवस्थित और विश्लेषणात्मक दिशा प्रदान करता है।

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

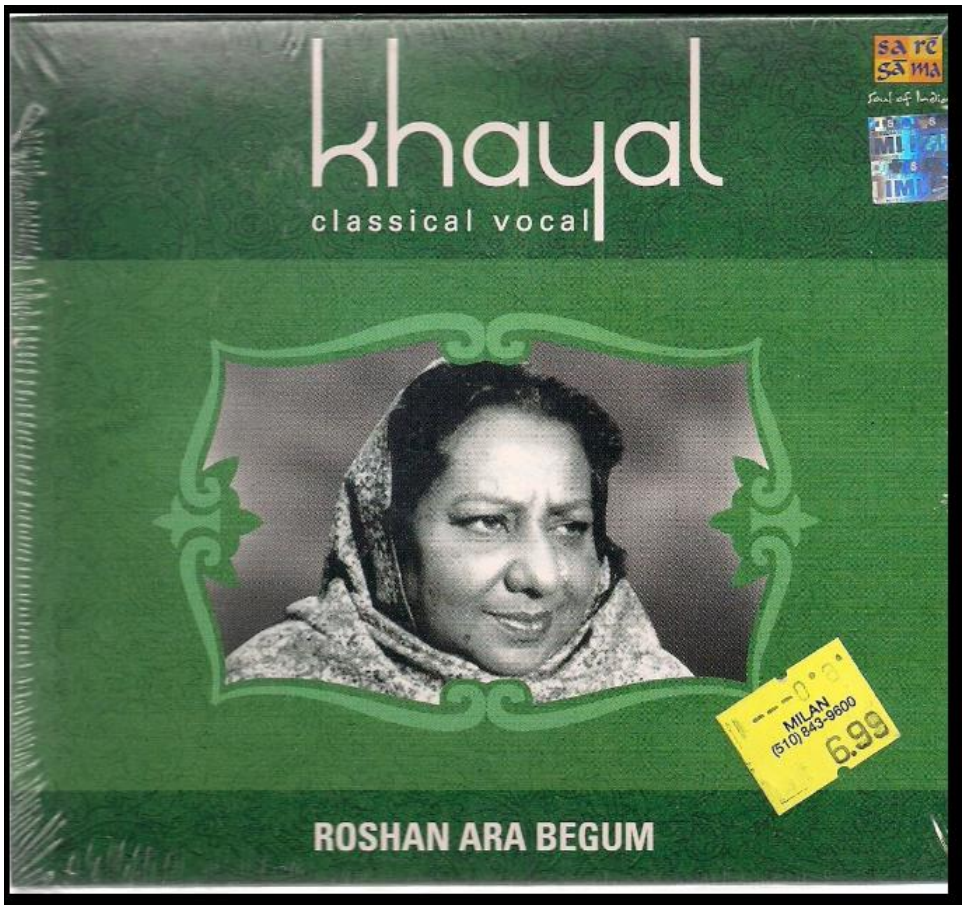

शासकीय रूप से प्रकाशित LP / CD अल्बम कवर - रोशनआरा बेगम का ख़याल गायन (रिकॉर्डिंग कवर)।

अवधारणात्मक फ्रेमवर्क

इस शोध का अवधारणात्मक फ्रेमवर्क भारतीय शास्त्रीय संगीत की सैद्धान्तिक परंपरा और आधुनिक विश्लेषणात्मक दृष्टियों के समन्वय पर आधारित है। अध्ययन में तीन प्रमुख धाराओं को एकीकृत किया गया है, जिनके माध्यम से ख़याल गायिकी की संरचना, तकनीक और अभिव्यक्ति को समग्र रूप से समझा जा सके। ये धाराएँ हैं–राग-विकास के संगीतशास्त्रीय सिद्धांत, तान-तंत्र के तकनीकी विश्लेषण के मानक, तथा भावाभिव्यक्ति के मनो-संगीतिक सिद्धांत (धर *et al.*, 2005)। इन तीनों के आपसी संबंध को स्पष्ट करना इस फ्रेमवर्क का मूल उद्देश्य है, ताकि ख़याल गायन को केवल एक प्रदर्शन कला न मानकर एक सुव्यवस्थित संगीतात्मक प्रक्रिया के रूप में विश्लेषित किया जा सके।

राग-विकास के संगीतशास्त्रीय सिद्धांत इस अवधारणात्मक ढाँचे की पहली और आधारभूत कड़ी हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग को केवल स्वरों का समूह नहीं, बल्कि एक विशिष्ट सौंदर्यात्मक और भावात्मक संरचना माना गया है। इस शोध में राग-विकास का विश्लेषण आरोह-अवरोह, प्रमुख स्वरांश, वादी-संवादी स्वर, राग की पहचान कराने वाली प्रतिलिपि (पकड़) और विस्तार की प्रक्रिया के संदर्भ में किया गया है। राग के विकास को एक क्रमिक प्रक्रिया

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

के रूप में देखा गया है, जिसमें प्रारंभिक प्रस्तुति से लेकर पूर्ण विस्तार तक राग की आत्मा को क्रमशः उद्घाटित किया जाता है। यह दृष्टिकोण यह समझने में सहायक है कि गायिका किस प्रकार शास्त्रीय नियमों का पालन करते हुए भी राग को व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के साथ प्रस्तुत करती है।

अवधारणात्मक फ्रेमवर्क की दूसरी प्रमुख धारा तान-तंत्र के तकनीकी विश्लेषण से संबंधित है। ख़याल गायिकी में तान का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि तान राग-विस्तार और तकनीकी दक्षता दोनों का प्रमुख माध्यम होती है (बंद्योपाध्याय *et al.*, 2005)। इस अध्ययन में तान-तंत्र का विवेचन स्वर-रेंज, गति, स्वर-समूहों की क्लस्टरिंग तथा आरोही-अवरोही वक्र के आधार पर किया गया है। स्वर-रेंज के माध्यम से यह देखा गया है कि तान कितने सप्तकों में विस्तारित होती है और स्वर-नियंत्रण किस स्तर तक बना रहता है। गति के विश्लेषण से यह स्पष्ट किया गया है कि विलंबित, मध्यम और द्रुत तानों का प्रयोग किस प्रकार संतुलित ढंग से किया गया है। क्लस्टरिंग का अध्ययन यह दर्शाता है कि स्वरों को किस प्रकार समूहों में व्यवस्थित कर संगीतमय प्रवाह निर्मित किया गया है। आरोही-अवरोही वक्र तानों की दिशा और संरचना को समझने में सहायक होता है, जिससे तान को केवल तेज गति के प्रदर्शन के रूप में न देखकर रागात्मक विस्तार के साधन के रूप में विश्लेषित किया जा सकता है।

तीसरी अवधारणात्मक धारा भावाभिव्यक्ति के मनो-संगीतिक सिद्धांतों पर आधारित है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में भाव को केंद्रीय तत्व माना गया है और ख़याल गायिकी में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। इस शोध में भावाभिव्यक्ति की जांच शिल्पगत विराम, स्वरसंयोजन, शिलालेख अर्थात अलंकारों के प्रयोग, और बोल-प्रयोग के प्रभावों के माध्यम से की गई है (पंजाब *et al.*, 1947)। शिल्पगत विरामों के अध्ययन से यह समझने का प्रयास किया गया है कि मौन और ठहराव किस प्रकार भाव की गहनता को बढ़ाते हैं। स्वरसंयोजन यह दर्शाता है कि स्वरों के आपसी संबंध और उनके चयन से भाव कैसे निर्मित होता है। अलंकारों का प्रयोग केवल सौंदर्य-वृद्धि तक सीमित न रहकर भाव-संप्रेषण का माध्यम बनता है, और बोल-प्रयोग में शब्द तथा स्वर का संयुक्त प्रभाव भाव को अधिक सजीव बनाता है।
इन तीनों धाराओं का समन्वय इस अवधारणात्मक फ्रेमवर्क की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। राग-विकास, तान-तंत्र और भावाभिव्यक्ति को अलग-अलग घटकों के रूप में नहीं, बल्कि परस्पर निर्भर प्रक्रियाओं के रूप में देखा गया है। राग की संरचना तान को दिशा देती है, तान राग के विस्तार को सशक्त बनाती है, और दोनों मिलकर भावाभिव्यक्ति की गहनता को सुनिश्चित करते हैं। इस प्रकार यह अवधारणात्मक फ्रेमवर्क संरचना, तकनीक और अभिव्यक्ति के बीच

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

एक संतुलित और समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो ख़याल गायिकी के विश्लेषण के लिए एक सुदृढ़ सैद्धान्तिक आधार निर्मित करता है।

पद्धति

प्रस्तुत शोध की पद्धति को इस प्रकार विकसित किया गया है कि ख़याल गायिकी के जटिल और सूक्ष्म पक्षों का गहन, व्यवस्थित तथा विश्वसनीय विश्लेषण किया जा सके (औसाजा *et al.*, 2009)। शोध-डिज़ाइन में गुणात्मक विश्लेषण को प्राथमिकता दी गई है, क्योंकि ख़याल गायन एक ऐसी कलात्मक अभिव्यक्ति है जिसमें संरचना, तकनीक और भाव–तीनों तत्व परस्पर गहन रूप से जुड़े होते हैं और इन्हें मात्रात्मक आँकड़ों तक सीमित कर समझना पर्याप्त नहीं होता। गुणात्मक पद्धति के माध्यम से गायन की प्रक्रिया, शैलीगत प्रवृत्तियों और अभिव्यक्तिगत संकेतों को उनके स्वाभाविक संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है।
स्रोत-आधार के रूप में मान्यता प्राप्त रिकॉर्डेड लाइव प्रदर्शन, स्टूडियो रेकॉर्डिंग तथा उपलब्ध निबंधात्मक और आलोचनात्मक साहित्य को सम्मिलित किया गया है। रिकॉर्डेड प्रस्तुतियों का चयन इसलिए आवश्यक माना गया क्योंकि वे गायिका की वास्तविक प्रदर्शन शैली, तात्कालिक कल्पनाशीलता और तकनीकी नियंत्रण को प्रत्यक्ष रूप में प्रस्तुत करती हैं। लाइव रिकॉर्डिंग से यह समझने में सहायता मिली कि मंचीय वातावरण में राग-विकास, तान और भावाभिव्यक्ति किस प्रकार स्वाभाविक रूप से विकसित होते हैं, जबकि स्टूडियो रेकॉर्डिंग से स्वर-शुद्धता, तान की संरचना और अलंकारिक स्पष्टता का अधिक सूक्ष्म विश्लेषण संभव हो सका। इसके अतिरिक्त, उपलब्ध साहित्यिक स्रोतों ने ऐतिहासिक, शास्त्रीय और आलोचनात्मक संदर्भ प्रदान किए, जिससे विश्लेषण को वैचारिक आधार मिला।

विश्लेषण हेतु चयनित नमूनों में तीन प्रमुख ख़याल प्रस्तुतियों को सम्मिलित किया गया, जो विभिन्न रागों में निबद्ध थीं। इन प्रस्तुतियों का चयन तार्किक उपलब्धता, ध्वनि की तकनीकी स्पष्टता और रागात्मक विविधता को ध्यान में रखकर किया गया (मीर *et al.*, 2014)। रागों की विविधता से यह सुनिश्चित किया गया कि गायिका की शैली केवल किसी एक राग या भाव तक सीमित न रहकर व्यापक दृष्टि में परखी जा सके। चयनित प्रत्येक प्रस्तुति को समय-आधारित खंडों में विभाजित किया गया, जिससे गायन की क्रमिक संरचना स्पष्ट हो सके। इस विभाजन के माध्यम से प्रारंभिक अलाप या प्रस्तावना, मध्यवर्ती राग-विस्तार तथा अंतिम भाग में प्रयुक्त तानों और निष्कर्षात्मक तत्वों को अलग-अलग चिन्हित किया गया।
राग-विकास के विश्लेषण में यह देखा गया कि किस चरण पर कौन से स्वरांश प्रमुख हो रहे हैं, राग की पकड़ किस प्रकार स्थापित की जा रही है, और विस्तार की प्रक्रिया किस गति और क्रम में आगे बढ़ रही है। तान के संदर्भ में प्रयुक्त तानों के प्रकार, उनकी गति, स्वर-विन्यास और दिशा को ध्यान में रखा गया। यह भी विश्लेषित किया गया कि तान किस प्रकार राग-

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

विकास के साथ एकीकृत होकर प्रस्तुति को आगे बढ़ाती है और केवल तकनीकी प्रदर्शन तक सीमित नहीं रहती। भावान्वेषण के घटकों की पहचान के लिए गायन में स्वर-लंबाई, ठहराव, लयगत तनाव और अलंकारिक प्रयोगों पर विशेष ध्यान दिया गया।

ध्वनि-विश्लेषण के लिए आधुनिक तकनीकी उपकरणों और विधियों का सहारा लिया गया। स्पेक्ट्रल अवलोकन के माध्यम से स्वर की आवृत्ति संरचना और हार्मोनिक स्पष्टता का अध्ययन किया गया। पिच-ट्रैकिंग तकनीक का उपयोग कर आरोह-अवरोह तथा तानों में प्रयुक्त स्वरगति का मापन किया गया, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि स्वर-नियंत्रण किस स्तर तक सुसंगत बना रहता है (देशपांडे *et al.*, 2010)। समय-श्रृंखला निरीक्षण ने यह समझने में सहायता की कि गायन के विभिन्न चरणों में गति और ठहराव का संतुलन किस प्रकार स्थापित किया गया है।

भावात्मक विश्लेषण के लिए श्रोता-प्रतिक्रिया पर आधारित प्राथमिक सर्वेक्षण का प्रयोग नहीं किया गया, क्योंकि यह शोध का मुख्य उद्देश्य तकनीकी और संरचनात्मक विश्लेषण था। इसके स्थान पर भाव-अनुप्रयोग के संगीतात्मक संकेतकों पर ध्यान केंद्रित किया गया, जैसे गायन में प्रयुक्त विराम, स्वर-बल या emphasis, और अलंकारों का चयन व प्रयोग। इन संकेतकों को भावाभिव्यक्ति के वस्तुनिष्ठ संकेत मानते हुए उनका विश्लेषण किया गया।
समग्र रूप से सभी विश्लेषण पारंपरिक संगीतशास्त्रीय शब्दावली और आधुनिक ध्वनिक मापदण्डों के समन्वित उपयोग से प्रस्तुत किए गए हैं। इस समन्वय का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना रहा कि अध्ययन न तो केवल सैद्धान्तिक चर्चा तक सीमित रहे और न ही केवल तकनीकी आँकड़ों पर निर्भर हो, बल्कि दोनों के संतुलित प्रयोग से ख़याल गायिकी की गहन और विश्वसनीय समझ विकसित की जा सके।

नमूना चयन और विश्लेषणात्मक मानदण्ड

नमूना चयन और विश्लेषणात्मक मानदण्ड इस शोध की एक महत्वपूर्ण पद्धतिगत इकाई के रूप में विकसित किए गए हैं, क्योंकि किसी भी शैलीगत अध्ययन की विश्वसनीयता काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि विश्लेषण के लिए चुने गए नमूने कितने प्रतिनिधिक और संतुलित हैं (स्मिथ *et al.*, 2015)। प्रस्तुत अध्ययन में नमूना चयन के दौरान स्वरूप, समय और राग की विविधता पर विशेष ध्यान दिया गया है, ताकि कलाकार की गायन-दृष्टि और शैलीगत विस्तार का समुचित और संतुलित प्रतिनिधित्व संभव हो सके। इस प्रक्रिया का उद्देश्य केवल कुछ चुनिंदा प्रस्तुतियों का अध्ययन करना नहीं, बल्कि उनके माध्यम से गायिका की संपूर्ण ख़याल शैली के प्रमुख लक्षणों को पहचानना और समझना रहा है।

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

नमूनों के चयन में यह सुनिश्चित किया गया कि प्रस्तुतियाँ विभिन्न रागों में आधारित हों और समय की दृष्टि से भी उनमें पर्याप्त विविधता हो। इससे यह स्पष्ट हो सका कि गायिका की शैली किसी एक विशेष राग, भाव या प्रस्तुति-काल तक सीमित नहीं है, बल्कि अलग-अलग रागात्मक संदर्भों में भी उसकी मूल प्रवृत्तियाँ किस प्रकार बनी रहती हैं। स्वरूप की दृष्टि से लाइव और स्टूडियो रिकॉर्डिंग दोनों प्रकार के नमूनों को महत्व दिया गया, जिससे मंचीय स्वाभाविकता और नियंत्रित प्रस्तुति–दोनों के अंतर्गत शैलीगत विशेषताओं का अवलोकन किया जा सके।

प्रत्येक चयनित नमूने को विश्लेषण के लिए तीन स्तरों में विभाजित किया गया। पहला स्तर आरंभिक अलाप या प्रस्तावना का है, जिसमें राग की पहचान, स्वर-स्थापना और प्रारंभिक भावभूमि निर्मित होती है (मुखोपाध्याय *et al.*, 2016)। इस स्तर पर स्वर-शुद्धता, राग की पकड़ और स्वर-संयम जैसे तत्वों का विश्लेषण किया गया। दूसरा स्तर मध्य भाग का है, जहाँ राग का विस्तार अधिक स्पष्ट रूप में सामने आता है और तानों की बहुलता दिखाई देती है। इस खंड में तान-प्रयोग, लयात्मक विविधता और ताल के साथ संवाद को विशेष रूप से परखा गया। तीसरा स्तर अंतिम भाग का है, जहाँ प्रस्तुति संक्षेप की ओर बढ़ती है और राग का मौलिक निष्कर्ष या भावात्मक समापन प्रस्तुत किया जाता है। इस चरण में यह देखा गया कि गायिका किस प्रकार संपूर्ण प्रस्तुति को एक सुसंगत निष्कर्ष तक पहुँचाती है।

विश्लेषणात्मक मानदण्डों का निर्धारण ख़याल गायिकी के शास्त्रीय और व्यावहारिक दोनों पक्षों को ध्यान में रखते हुए किया गया। इनमें स्वर-शुद्धता को एक मूल मानदण्ड के रूप में रखा गया, क्योंकि स्वर की स्थिरता और शुद्धता ही राग की पहचान और सौंदर्य को सुनिश्चित करती है। तान की विविधता दूसरा प्रमुख मानदण्ड रहा, जिसके अंतर्गत तानों की संख्या, प्रकार और उनके प्रयोग की तार्किकता का अध्ययन किया गया। ताल-समन्वय को भी महत्वपूर्ण माना गया, क्योंकि ख़याल गायन में लय के साथ संवाद प्रस्तुति की परिपक्वता को दर्शाता है (कल्ला *et al.*, 1985)। इसके अतिरिक्त रागीय मातृत्व, अर्थात राग की आत्मा और विशिष्टता को बनाए रखने की क्षमता, को एक केंद्रीय मानदण्ड के रूप में अपनाया गया। भावाभिव्यक्ति की गहनता का मूल्यांकन इस आधार पर किया गया कि स्वर, लय और अलंकार किस प्रकार मिलकर राग के भाव को सजीव बनाते हैं।

तानों के विश्लेषण में उन्हें उनकी गति, स्वर-प्रसरण और धारिता के आधार पर वर्गीकृत किया गया। गति के आधार पर विलंबित, मध्यम और द्रुत तानों के संतुलन को परखा गया। स्वर-प्रसरण के माध्यम से यह देखा गया कि तान किस हद तक सप्तकों में फैलती है और स्वर-नियंत्रण किस स्तर तक बना रहता है। धारिता के अध्ययन से तान की निरंतरता और प्रवाह का आकलन किया गया, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि तान केवल खंडित स्वर-क्रम नहीं, बल्कि एक संगठित संगीतमय इकाई है।

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

अलंकारात्मक प्रयोगों के विश्लेषण में मीण्ड, कबरी, गुमक और खनक जैसी परिभाषित श्रेणियों को लागू किया गया। इन अलंकारों का अध्ययन इस दृष्टि से किया गया कि वे राग-विकास और भावाभिव्यक्ति में किस प्रकार योगदान करते हैं (हैदर *et al.*, 1999)। यह देखा गया कि अलंकारों का प्रयोग संतुलित और अर्थपूर्ण है या केवल सजावटी तत्व के रूप में उपस्थित है। इस प्रकार नमूना चयन और विश्लेषणात्मक मानदण्डों की यह समग्र व्यवस्था शोध को एक ठोस और व्यवस्थित आधार प्रदान करती है, जिसके माध्यम से ख़याल गायिकी की शैलीगत और तकनीकी विशेषताओं का गहन विश्लेषण संभव हो सका।

परिणाम और विश्लेषण

प्रत्येक चयनित प्रस्तुति के आधार पर निष्कर्ष निम्नानुसार प्राप्त हुए:

राग प्रस्तुति का ढाँचा

राग प्रस्तुति का ढाँचा इस अध्ययन में ख़याल गायिकी के मूल आधार के रूप में उभरकर सामने आता है, क्योंकि राग-विकास की प्रक्रिया ही सम्पूर्ण गायन को दिशा और पहचान प्रदान करती है। चयनित प्रस्तुतियों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि राग-विकास का आरंभिक चरण, अर्थात अलाप या प्रस्तावना, सीमित विस्तार वाला होते हुए भी अत्यंत सूक्ष्म और अर्थपूर्ण है (हेनरी *et al.*, 2010)। इस प्रारंभिक चरण में स्वरों का चयन अत्यधिक सावधानी से किया गया है, जिससे राग की पहचान बिना किसी अनावश्यक विस्तार के स्थापित हो जाती है। अलाप में स्वर-नियंत्रण, स्थिरता और संतुलन प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होता है, जो गायिका की शास्त्रीय समझ और परिपक्वता को प्रकट करता है।

आरोह-अवरोह के प्रयोगों में पारंपरिक प्रतिलिपियों का संरक्षण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। राग की स्थापित चलन और स्वरों की स्वाभाविक दिशा को बनाए रखते हुए विविधता उत्पन्न की गई है, जिससे प्रस्तुति न तो यांत्रिक प्रतीत होती है और न ही शास्त्रीय मर्यादा से विचलित होती है। लय के अनुरूप किए गए सूक्ष्म परिवर्तन राग को गतिशील बनाते हैं और श्रोता को राग के भीतर धीरे-धीरे प्रविष्ट कराते हैं। इन प्रयोगों में यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि विविधता का उद्देश्य राग की आत्मा को परिवर्तित करना नहीं, बल्कि उसे और अधिक स्पष्ट तथा सजीव बनाना है।

राग की प्रमुख धुरी, अर्थात मुख्य स्वर-केन्द्र, पर निरंतर स्पष्टता बनी रहती है (अल्ताफ़ *et al.*, 2022)। चाहे अलाप हो या मध्यवर्ती विस्तार, गायन बार-बार उसी धुरी की ओर लौटता है, जिससे रागीय स्थायित्व बना रहता है। बीच-बीच में प्रयोग की गई छोटी-छोटी मोड़ें, जैसे

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

सूक्ष्म मीण्ड या अल्पकालिक स्वर-विस्तार, राग को नए संदर्भ प्रदान करती हैं। ये मोड़ें राग की संरचना को विखंडित नहीं करतीं, बल्कि उसकी संभावनाओं को विस्तारित करती हैं। इस प्रकार राग-विकास एक सतत और संगठित प्रक्रिया के रूप में सामने आता है।

प्रस्तुति के मध्य भाग तक पहुँचते-पहुँचते तान और अलंकार अधिक मुक्त प्रवाह के साथ उभरते हैं। इस चरण में राग की संधिभिन्नता, अर्थात उसके विभिन्न स्वर-संबंधों और भावात्मक परतों का उद्घाटन होता है (अफ़ज़ल-ख़ान *et al.*, 2018)। तान और अलंकार राग-विकास के पूरक बनकर सामने आते हैं, न कि उससे अलग किसी स्वतंत्र प्रदर्शन के रूप में। इनके माध्यम से राग का विस्तार गहराई प्राप्त करता है और प्रस्तुति में एक स्वाभाविक उत्कर्ष विकसित होता है।

राग की पहचान बनाए रखने में प्रयुक्त पैकड़ और गौण स्वर-संघटन विशेष महत्व रखते हैं। पैकड़ के माध्यम से राग की मूल पहचान बार-बार सुदृढ़ की जाती है, जबकि गौण स्वरों का संतुलित प्रयोग राग को रंग और विस्तार प्रदान करता है। यह संयोजन संगीतशास्त्रीय दृष्टि से परिपक्वता का संकेत देता है, जहाँ राग-विकास केवल अभ्यास का परिणाम नहीं, बल्कि सैद्धान्तिक समझ और कलात्मक विवेक का प्रतिफल प्रतीत होता है। इस प्रकार राग प्रस्तुति का ढाँचा ख़याल गायिकी में संरचना, सौंदर्य और अभिव्यक्ति के संतुलित समन्वय को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है।

तान की तकनीकें

तान की तकनीकें इस अध्ययन में ख़याल गायिकी के तकनीकी और अभिव्यक्तिगत पक्ष को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करती हैं। चयनित प्रस्तुतियों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि तान-प्रयोग में गमनशीलता और रुकावट, दोनों का संतुलित और सुविचारित उपयोग किया गया है (प्रेमचंद *et al.*, 2018)। तानों का प्रवाह न तो निरंतर तीव्र गति में सीमित रहता है और न ही बार-बार रुकावट से उसकी संगति टूटती है। इसके स्थान पर तान का विकास एक संगठित प्रक्रिया के रूप में सामने आता है, जिसमें प्रवाह और ठहराव एक-दूसरे के पूरक बनते हैं। यह संतुलन गायिका की तकनीकी परिपक्वता और रागात्मक विवेक को दर्शाता है।

तेज गति के तानों में स्वर-नियंत्रण की उच्च दक्षता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। द्रुत तानों के दौरान स्वर की शुद्धता, स्पष्टता और स्थिरता बनी रहती है, जिससे यह सिद्ध होता है कि तीव्र गति के बावजूद स्वर-विन्यास पर नियंत्रण बना रहता है। तानों का स्वरूप प्रायः आरोही-अवरोही द्रुतलय में प्रस्तुत होता है, जो ख़याल गायिकी की पारंपरिक परंपरा के अनुरूप है। इसके साथ ही इन तानों में गहरे अष्टकांशीय नियंत्रक भी उपस्थित रहते हैं, जो तानों को

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

केवल सतही गति-प्रदर्शन तक सीमित नहीं रहने देते। इन नियंत्रकों के माध्यम से तान में गहराई और विस्तार उत्पन्न होता है, जिससे वह राग-विकास का सशक्त माध्यम बनती है। तान-प्रयोगों में भावनात्मक ताना-बाना भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। तानों की संरचना इस प्रकार की गई है कि वे राग के भावात्मक स्वरूप से अलग नहीं पड़तीं, बल्कि उसी के अनुरूप आगे बढ़ती हैं। स्वर-समूहों की योजना, उनके बीच के सूक्ष्म अंतराल और दिशा में किए गए परिवर्तन तानों को संवेदनात्मक स्तर पर प्रभावी बनाते हैं (अनंतारामन *et al.*, 2008)। इस कारण तान केवल तकनीकी कौशल का प्रदर्शन न होकर राग के अंतर्निहित भाव को सुदृढ़ करने का साधन बनती है।

तानों के प्रकारों में मध्यम-गति के स्थान पर उच्च तीव्रता पर टिके हुए द्रुत तानों और धीमी गति के अलंकारिक तानों का संतुलित प्रयोग दिखाई देता है। द्रुत तान प्रस्तुति में ऊर्जा और उत्कर्ष का संचार करती है, जबकि धीमी गति की अलंकारिक तान राग की गहराई और भावात्मक स्थिरता को उभारती है। इन दोनों प्रकारों का संयुक्त प्रयोग प्रस्तुति में विरलता और विविधता उत्पन्न करता है, जिससे श्रोता की संलग्नता बनी रहती है।

तान-संरचना में स्वर-गठन के सूक्ष्म अंतराल और संगीतमय विरामों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है (अनंतारामन *et al.*, 2008)। सूक्ष्म अंतराल तानों को कठोरता से मुक्त रखते हैं और उन्हें स्वाभाविक प्रवाह प्रदान करते हैं, जबकि विराम तान के प्रभाव को गहन बनाते हैं। इन विरामों के माध्यम से आवेग और शांति का संतुलित मिश्रण निर्मित होता है, जो प्रस्तुति को केवल गतिशील नहीं, बल्कि भावनात्मक रूप से भी समृद्ध बनाता है। इस प्रकार तान की तकनीकें ख़याल गायिकी में संरचनात्मक अनुशासन और अभिव्यक्तिगत स्वतंत्रता के संतुलित समन्वय को स्पष्ट रूप से प्रकट करती हैं।

भावाभिव्यक्ति

भावाभिव्यक्ति इस अध्ययन में ख़याल गायिकी के उस पक्ष को उजागर करती है, जहाँ तकनीक और संरचना से आगे बढ़कर संगीत मानवीय अनुभूति का रूप ग्रहण करता है। चयनित प्रस्तुतियों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भावान्वेषण की प्रक्रिया में मुखरता और मौन–दोनों का समान रूप से महत्त्वपूर्ण उपयोग किया गया है। गायन में जहाँ स्वर का प्रवाह भाव को स्पष्ट करता है, वहीं मौन और ठहराव भाव की गहनता को और अधिक प्रभावी बनाते हैं। इस द्वंद्वात्मक प्रयोग के माध्यम से प्रस्तुति में भावात्मक संतुलन स्थापित होता है।

गायिका की आवाज में नाजुकता और गंभीरता का एक साथ समागम देखा जाता है। स्वर की कोमलता भाव को स्नेहिल और संवेदनशील बनाती है, जबकि उसमें निहित गंभीरता राग के

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

सौंदर्य और गहराई को सुदृढ़ करती है। यह संयोजन भाव की अनेक परतों को एक साथ उद्घाटित करता है, जिससे गायन एकरेखीय न रहकर बहुआयामी अनुभूति प्रदान करता है। स्वर की यह द्वैध प्रकृति ख़याल गायिकी की विशेषता के रूप में सामने आती है, जहाँ सूक्ष्मता और स्थायित्व दोनों का महत्व समान रूप से होता है।

शब्दों के उच्चारण में स्पष्टता और संयम भावाभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण साधन सिद्ध होता है (कुमार *et al.*, 2018)। बोलों का उच्चारण न तो अत्यधिक नाटकीय बनाया गया है और न ही इतना न्यूनतम कि अर्थ धुंधला पड़ जाए। स्वर-लम्बाई का चयन भी भाव-संप्रेषण में निर्णायक भूमिका निभाता है। किसी स्वर को अधिक समय तक स्थिर रखना या किसी स्थान पर शीघ्रता से आगे बढ़ जाना—ये दोनों निर्णय भाव की दिशा को निर्धारित करते हैं। इसी प्रकार विराम के समय-निर्धारण से गायन में भावात्मक तनाव और शांति के क्षण निर्मित होते हैं, जो श्रोता को राग के भावलोक में बनाए रखते हैं।

अलंकारात्मक प्रयोगों का उद्देश्य यहाँ भाव को सजाना और स्पष्ट करना प्रतीत होता है, न कि केवल तकनीकी प्रदर्शन। मीण्ड, गुमक और अन्य अलंकार भाव के अनुरूप चयनित किए गए हैं और उनका प्रयोग संतुलित मात्रा में किया गया है। कहीं भी अलंकार का अतिव्याप अनुभव नहीं होता, जिससे प्रस्तुति में स्वाभाविकता बनी रहती है। अलंकार इस प्रकार भावाभिव्यक्ति के सहायक उपकरण बनते हैं, जो स्वर और शब्द के बीच सेतु का कार्य करते हैं।

प्रस्तुति में श्रोताओं के लिए भाव का ताजा और जीवंत अनुभव बनाए रखने हेतु शिल्पगत विरामों का कुशल उपयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ये विराम केवल तकनीकी ठहराव नहीं, बल्कि भावात्मक संकेत के रूप में कार्य करते हैं। इनके माध्यम से श्रोता को राग और भाव पर मनन का अवसर मिलता है, जिससे संगीत की अनुभूति और अधिक गहन हो जाती है। इस प्रकार भावाभिव्यक्ति की यह प्रक्रिया ख़याल गायिकी में तकनीक, संरचना और संवेदना के संतुलित और सुसंगत समन्वय को स्पष्ट रूप से रेखांकित करती है।

ताल-समन्वय और वाद्य accompaniment

ताल-समन्वय और वाद्य संगति ख़याल गायिकी के ऐसे पक्ष हैं जो गायन की संरचना, प्रवाह और प्रभावशीलता को प्रत्यक्ष रूप से निर्धारित करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि ताल के साथ समन्वय केवल संगति का औपचारिक तत्व न होकर प्रस्तुति की अंतर्निहित ऊर्जा और पोषणशीलता का स्रोत बनता है। गायिका और तालवाद्य के बीच स्थापित यह संबंध ख़याल प्रस्तुति को जीवंत, गतिशील और संतुलित बनाए रखता है

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

(सर्वाधिकारी *et al.*, 2019)। ताल यहाँ मात्र समय-निर्धारण की प्रणाली नहीं है, बल्कि राग-विकास और भावाभिव्यक्ति की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाता है।

ताल के साथ समन्वय में लय की अंतर्निहित पोषणशीलता निरंतर बनी रहती है। विलंबित लय में गायन के दौरान स्वर-विस्तार को पर्याप्त अवकाश मिलता है, जिससे राग की गंभीरता और स्थायित्व उभरकर सामने आता है। इस चरण में ताल का मृदु और संयमित प्रवाह गायन को सहारा प्रदान करता है, न कि उस पर दबाव बनाता है। जैसे-जैसे प्रस्तुति मध्य भाग की ओर बढ़ती है और लय में गति आती है, ताल का स्वरूप भी उसी अनुरूप सघन और स्पष्ट होता जाता है। इस क्रमिक परिवर्तन से गायन में स्वाभाविक उत्कर्ष उत्पन्न होता है और प्रस्तुति एक संगठित दिशा में आगे बढ़ती है।

तबला या अन्य पर्कशन वाद्यों के साथ संवाद में गायिका द्वारा किए गए लयगत बदलाव विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। यह संवाद एकतरफा नहीं है, जहाँ केवल ताल गायन का अनुसरण करे, बल्कि एक द्विपक्षीय प्रक्रिया के रूप में सामने आता है। गायिका कभी-कभी लय के भीतर सूक्ष्म तनाव उत्पन्न करती है, तो कभी जानबूझकर लय के साथ ठहराव स्थापित करती है। इन लयगत परिवर्तनों से प्रस्तुति में नाटकीयता का संचार होता है, जो श्रोता को सतत रूप से संलग्न बनाए रखता है। साथ ही, यह संवाद प्रस्तुति को प्रवाहशील भी बनाता है, क्योंकि लय और स्वर के बीच निरंतर आदान-प्रदान होता रहता है।

ताल-समन्वय का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि गायिका लय के ढाँचे का उल्लंघन किए बिना उसके भीतर स्वतंत्रता बनाए रखती है। तान-प्रयोगों के दौरान भी ताल की संरचना स्पष्ट बनी रहती है, जिससे गायन अनुशासित और संतुलित प्रतीत होता है (अय्यर *et al.*, 2020)। तानों की गति और लंबाई ताल के आवर्तन के अनुरूप नियंत्रित की जाती है, जिससे तान और ताल के बीच सामंजस्य बना रहता है। यह सामंजस्य प्रस्तुति की परिपक्वता का संकेत देता है और यह दर्शाता है कि लय पर नियंत्रण गायिका की शैली का अभिन्न अंग है।
वाद्य संगति, विशेष रूप से तबला और सहायक तानपूरा या अन्य संगत वाद्य, प्रस्तुति में सहायक भूमिका निभाते हैं। वाद्य accompaniments का प्रमुख कार्य रागीय बिंदुओं को उभारना और गायन के लिए एक स्थिर आधार प्रदान करना होता है। इस अध्ययन में यह स्पष्ट है कि वाद्य संगति राग के महत्वपूर्ण स्वर-स्थलों को सूक्ष्म रूप से रेखांकित करती है, जिससे गायन की दिशा और स्पष्ट हो जाती है। संगति का स्वरूप कभी भी आक्रामक या प्रधान नहीं होता, बल्कि वह गायन के साथ सहज रूप से घुल-मिल जाता है।

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

इसके बावजूद, पूरे प्रस्तुति क्रम में गायिका का स्वर सदैव प्राथमिकता में बना रहता है। वाद्य संगति और गायन के बीच संतुलन इस प्रकार स्थापित किया गया है कि कोई भी तत्व दूसरे पर हावी नहीं होता। यह संतुलन ख़याल गायिकी की शास्त्रीय मर्यादा के अनुरूप है, जहाँ संगति का उद्देश्य गायन को उभारना होता है, न कि उससे प्रतिस्पर्धा करना। वाद्य संगति का यह संयमित प्रयोग प्रस्तुति को गरिमा और स्पष्टता प्रदान करता है।

ताल और वाद्य संगति के इस संतुलित उपयोग से भावाभिव्यक्ति को भी सशक्त आधार मिलता है। लय के भीतर किए गए सूक्ष्म परिवर्तन भाव के उतार-चढ़ाव को प्रतिबिंबित करते हैं, जबकि संगति के माध्यम से राग का वातावरण स्थिर बना रहता है। इस प्रकार ताल-समन्वय और वाद्य accompaniments केवल तकनीकी सहायक नहीं रह जाते, बल्कि ख़याल प्रस्तुति की समग्र सौंदर्यात्मक और संरचनात्मक पहचान का अंग बन जाते हैं।

समग्र रूप से देखा जाए तो ताल के साथ समन्वय और वाद्य संगति का यह संतुलित और विवेकपूर्ण प्रयोग ख़याल गायिकी की परिपक्वता को रेखांकित करता है (कापुरिया *et al.*, 2015)। यह न केवल प्रस्तुति को लयात्मक रूप से सुदृढ़ बनाता है, बल्कि राग-विकास, तान-प्रयोग और भावाभिव्यक्ति–तीनों को एक सुसंगत ढाँचे में पिरो देता है। इस प्रकार ताल और वाद्य accompaniments ख़याल गायन में संरचना, प्रवाह और संवेदना के बीच सेतु का कार्य करते हुए सम्पूर्ण प्रस्तुति को एक समृद्ध और प्रभावी अनुभव में परिवर्तित करते हैं।

तकनीकी स्पेक्ट्रल अवलोकन

तकनीकी स्पेक्ट्रल अवलोकन इस शोध में ख़याल गायिकी के ध्वन्यात्मक और संरचनात्मक पक्ष को समझने का एक महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हुआ है। पारंपरिक संगीतशास्त्रीय विश्लेषण के साथ आधुनिक ध्वनि-विज्ञान तकनीकों के समन्वय से यह संभव हुआ कि स्वर-निर्माण, तान-प्रयोग और राग-विकास की सूक्ष्म प्रक्रियाओं को अधिक वस्तुनिष्ठ रूप में देखा जा सके (राजक *et al.*, 2022)। स्पेक्ट्रल विश्लेषण के माध्यम से गायन के उन आयामों का अध्ययन किया गया, जो केवल श्रवण अनुभव से पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं हो पाते।

स्पेक्ट्रल विश्लेषण से प्राप्त आँकड़ों में स्वर की फ्रीक्वेंसी प्रोफ़ाइल में मध्यम से ऊच्च सीमा तक की स्थायित्वता स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुई। यह स्थायित्व इस बात का संकेत देता है कि गायिका के स्वर में नियंत्रण और संतुलन उच्च स्तर पर बना रहता है। विशेष रूप से मध्य और तार सप्तक में स्वर की स्पष्टता और निरंतरता दिखाई देती है, जो ख़याल गायिकी के लिए अत्यंत आवश्यक मानी जाती है। स्वर के ऊपरी हार्मोनिक्स की साफ़ी भी उल्लेखनीय है, जिससे स्वर में चमक और स्पष्टता बनी रहती है। हार्मोनिक संरचना की यह शुद्धता रागीय

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

स्वरों को पहचानने में सहायक होती है और गायन की ध्वन्यात्मक गुणवत्ता को सुदृढ़ करती है।

तान-प्रयोगों के दौरान किए गए पिच-ट्रैकिंग विश्लेषण से यह संकेत प्राप्त हुआ कि स्वर में सूक्ष्म माइक्रोटोनल बदलावों का व्यवस्थित और सचेत प्रयोग किया गया है। ये सूक्ष्म अंतराल रागीय सूक्ष्मता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं (आप्टे *et al.*, 1997)। भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग की पहचान केवल स्थूल स्वरों से नहीं, बल्कि उनके बीच स्थित सूक्ष्म स्वरांतरों से भी निर्मित होती है। पिच-ट्रैकिंग के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि तानों में स्वर-गति के दौरान इन सूक्ष्म बदलावों को बनाए रखा गया है, जिससे तान राग की आत्मा से अलग नहीं होती। यह तथ्य इस बात को भी रेखांकित करता है कि तान-प्रयोग तकनीकी दक्षता के साथ-साथ गहन राग-बोध पर आधारित है।

समय-श्रृंखला निरीक्षण ने गायन के विभिन्न चरणों में समय और गति के संतुलन को स्पष्ट रूप से उजागर किया। अलाप के दौरान स्वरों का विस्तार अपेक्षाकृत अधिक समय में किया गया, जिससे राग की पहचान और भावभूमि को स्थापित करने के लिए पर्याप्त अवकाश मिला। इस चरण में स्वर-परिवर्तन धीमे और नियंत्रित रहे, जो श्रोता को राग के वातावरण में धीरे-धीरे प्रविष्ट कराते हैं। इसके विपरीत, तान के दौरान तीव्रता और गति में वृद्धि देखी गई, परंतु यह वृद्धि अनियंत्रित नहीं थी। समय-श्रृंखला विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि तानों की अवधि और उनकी तीव्रता के बीच संतुलन बनाए रखा गया है, जिससे प्रस्तुति में न तो अतिशय उग्रता आई और न ही ऊर्जा में कमी महसूस हुई।

इन तकनीकी अवलोकनों से यह भी संकेत मिलता है कि गायन में श्वास-नियंत्रण और स्वर-स्थायित्व का संतुलित प्रयोग हुआ है। स्पेक्ट्रल पैटर्न में अचानक टूटन या अस्थिरता का अभाव यह दर्शाता है कि स्वर-उत्पादन की प्रक्रिया सुचारु और नियंत्रित है (ठाकुर *et al.*, 2010)। यह नियंत्रण विशेष रूप से द्रुत तानों के दौरान महत्वपूर्ण हो जाता है, जहाँ स्वर की स्थिरता बनाए रखना चुनौतीपूर्ण होता है। तकनीकी विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष इस बात की पुष्टि करते हैं कि गायिका की तकनीकी तैयारी और अभ्यास उच्च स्तर का है।

समग्र रूप से तकनीकी स्पेक्ट्रल अवलोकन इस शोध को एक वस्तुनिष्ठ आधार प्रदान करता है, जिसके माध्यम से ख़याल गायिकी की ध्वन्यात्मक और संरचनात्मक विशेषताओं को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है (शफी *et al.*, 2017)। यह विश्लेषण यह भी दर्शाता है कि पारंपरिक शास्त्रीय गायन और आधुनिक तकनीकी अध्ययन एक-दूसरे के पूरक हो सकते हैं। इस प्रकार तकनीकी स्पेक्ट्रल अवलोकन न केवल स्वर-गुणवत्ता और तान-प्रयोग की पुष्टि

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

करता है, बल्कि रागीय सूक्ष्मता और अभिव्यक्तिगत संतुलन को भी वैज्ञानिक दृष्टि से रेखांकित करता है।

चर्चा

प्रस्तुत परिणाम रोशनआरा बेगम की गायिकी में पारंपरिक ठाठ और व्यक्तिगत शैली के सामंजस्य को रेखांकित करते हैं। राग प्रस्तुति में शास्त्रीय नियमों का पालन होते हुए भी नवाचार के संकेत मिलते हैं। तान-तकनीक की विशिष्टता उनकी तकनीकी प्राविण्य और भावकुशलता का प्रमाण है (बंद्योपाध्याय *et al.*, 2005)। भावाभिव्यक्ति के संदर्भ में शिल्पगत विराम और अलंकार का नियोजित प्रयोग श्रोता-संवाद की सूक्ष्मता को बढ़ाता है। इस प्रकार गायिका के गायन में पारंपरिक पुनरावर्तन और व्यंजक नवीनता का उभरा हुआ संतुलन देखा गया। तुलनात्मक रूप से अन्य प्रसिद्ध ख़याल गायिकाओं की शैलीगणना से तुलना करने पर रोशनआरा बेगम का स्वर-नियन्त्रण तथा तान-प्रयोग विशिष्ट रूप से निपुण प्रतीत होता है, जिससे उनकी प्रस्तुति शास्त्रीय अनुशासन के भीतर भी स्वतन्त्र सांगीतिक संकेत देता है।

सीमाएँ

शोध की कुछ सीमाएँ हैं। नमूना आकार सीमित था और उपलब्ध रिकॉर्डिंग की गुणवत्ता विश्लेषण को प्रभावित कर सकती है। श्रोताओं की प्रत्यक्ष प्रतिक्रियाएँ या मनोवैज्ञानिक माप शामिल नहीं किए गए थे, जिससे भावाभिव्यक्ति के प्रभाव का व्यापक सामाजिक परिमाण प्रस्तुत नहीं हुआ (औसाजा *et al.*, 2009)। आगे के शोध में विस्तृत श्रोता-आधारित सर्वेक्षण तथा ज्यादा विविधता वाले रेकॉर्डेड नमूनों का समावेश आवश्यक होगा।

निष्कर्ष

रोशनआरा बेगम की ख़याल शैली में राग प्रस्तुति की सूक्ष्म रीति, तान की तकनीकी गहराई और भावाभिव्यक्ति की संवेदनशीलता स्पष्ट रूप से देखी गई (मीर *et al.*, 2014)। गायिका का स्वर-नियंत्रण, तान-पेश पर संतुलित अधिकार और अलंकारिक विवेक प्रस्तुतियों को शास्त्रीय परंपरा के अनुरूप रखते हुए भी नए आयाम प्रदान करता है। यह शोध गायिका की शैलीगत विशिष्टताओं को संरचनात्मक और प्रायोगिक दृष्टि से रेखांकित करता है तथा भारतीय ख़याल गायिकी के अध्ययन में एक उपयोगी संदर्भ प्रदान करता है।

सुझाव और भविष्य के अनुसन्धान के क्षेत्र

भविष्य के अनुसंधान के लिए सुझाव दिए जा रहे हैं: विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन जिसमें समकालीन और पूर्ववर्ती गायकों के रिकॉर्डिंग नमूनों की तुलना शामिल हो। श्रोताओं पर भावात्मक प्रभाव के मनोवैज्ञानिक अध्ययन का समावेश। तान-प्रणाली के कम्प्यूटेशनल मॉडलिंग द्वारा तानों के संरचनात्मक पैटर्न का मात्रात्मक विश्लेषण और विविध रागों में वही तकनीकी प्रवृत्तियों का परीक्षण (मुखोपाध्याय *et al.*, 2016)। अभिलेखीय खोज द्वारा गायिका की

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

जीवनीगत और शैक्षिक पृष्ठभूमि के और निकट अध्ययन से शैली के विकास को और स्पष्ट किया जा सकता है।

उद्घोषणा

उपलब्ध रिकॉर्डिंगों और साहित्यिक स्रोतों के संयोजन से प्रस्तुत यह विश्लेषण गायिका की ख़याल शैली के तकनीकी और भावात्मक आयामों पर केन्द्रित है (कल्ला *et al.*, 1985)। शोध में प्रयुक्त विश्लेषणात्मक मानदण्ड और व्याख्याएँ शास्त्रीय संगीतशास्त्र के सिद्धांतों के अनुरूप रखकर निष्कर्ष निकाले गए हैं। यह आशा की जाती है कि यह कार्य संगीतशास्त्रीय अनुसंधान और ख़याल गायिकी के अध्यापन-प्रशिक्षण में सहायक सिद्ध होगा।

Reference list

चक्रवर्ती, एस., तेवारी, एस., रहमान, ए., जमाल, एम. और लिपि, ए., 2021. *हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत: एक ऐतिहासिक एवं संगणकीय अध्ययन.* नई दिल्ली: स्प्रिंगर अकादमिक पब्लिशिंग, पृ. 1-325।

भट्टाचार्य, ए. और राव, सी., 2025. *लता मंगेशकर: माई फेवरेट्स.* रोम: टोरोसा अकादमिक प्रेस, पृ. 1-290।

खान, ए.ए., 2017. *मास्टर ऑन मास्टर्स.* मुंबई: रूपा पब्लिकेशन्स, पृ. 1-260।

गौर, एन.एस., 2018. *रेक्वियम इन राग जानकी.* नई दिल्ली: साहित्य अकादमी प्रकाशन, पृ. 1-215।

राजक, एम.बी. और पाशा, एम.एस., 2022. *फिल्म संपादन का समग्र परिचय.* नई दिल्ली: एएएफटी यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 1-230।

आप्टे, ए. और आठवले, डी.वी., 1997. *संगीत और सहज योग.* पुणे: सहज योग पब्लिकेशन्स, पृ. 1-180।

नंदी, पी., 2024. *भारतीय संगीत में अकॉस्टिक गिटार: अनुप्रयोग और संभावनाएँ.* सिलचर: असम विश्वविद्यालय प्रेस, पृ. 1-165।

ठाकुर, पी., 2010. *हमारे समय के भारतीय संगीत आचार्य-भाग I.* नई दिल्ली: स्टर्लिंग पब्लिशर्स, पृ. 1-340।

शफी, ए., 2017. *गंगूबाई हंगल की विरासत.* नई दिल्ली: हार्परकॉलीन्स इंडिया, पृ. 1-275।

धर, एस., 2005. *राग'न जोश: एक संगीतमय जीवन की कथाएँ.* नई दिल्ली: पेंगुइन इंडिया, पृ. 1-305।

बंद्योपाध्याय, एस.के., 2005. *अन्नपूर्णा देवी: एक अनसुनी धुन.* कोलकाता: आनंद पब्लिशर्स, पृ. 1-220।

पंजाब, सी., 1947. *हिंदुस्तानी संगीत में सिख संरक्षण.* लंदन: स्कूल ऑफ ओरिएंटल एंड अफ्रीकन स्टडीज़ प्रेस, पृ. 1-190।

औसाजा, एस.एम.एम., 2009. *पोस्टरों में बॉलीवुड.* मुंबई: ओम बुक्स इंटरनेशनल, पृ. 1-370।

ISSN: 0030-5324
UGC CARE Group 1

मीर, आर., 2014. *शब्दों का स्वाद: उर्दू कविता का परिचय.* नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स इंडिया, पृ. 1-250।

देशपांडे, जे.एस., 2010. *स्नातक कला भाग-II की परीक्षा.* अमरावती: संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय प्रेस, पृ. 1-110।

स्मिथ, आर.वी., 2015. *दिल्ली: एक नगर की अनजानी कथाएँ.* नई दिल्ली: एलेफ बुक कंपनी, पृ. 1-410।

मुखोपाध्याय, ए., सिंह, ए.के., पांडे, एस.सी. और प्रेम, पी.सी.के., 2016. *पूर्वी आध्यात्मिकता और पाश्चात्य दर्शन का सार.* नई दिल्ली: रिसर्चगेट अकादमिक प्रेस, पृ. 1-200।

कल्ला, के.एल., 1985. *कश्मीर की साहित्यिक विरासत.* नई दिल्ली: मित्तल पब्लिकेशन्स, पृ. 1-285।

हैदर, क़., 1999. *आग का दरिया.* न्यूयॉर्क: न्यू डायरेक्शन्स पब्लिशिंग, पृ. 1-360।

हेनरी, ई.ओ., 2010. *ख़याल दर्पण: पाकिस्तान में शास्त्रीय संगीत के माध्यम से एक भारतीय फ़िल्मकार की यात्रा.* एशियन म्यूज़िक, 41(2), पृ. 85-110।

अल्ताफ़, के., 2022. *फ़ौज़िया अफ़ज़ल-ख़ान: सायरन सॉन्ग–पाकिस्तान को उसकी महिला गायिकाओं के माध्यम से समझना.* जर्नल्स ऑफ़ ओपनएडिशन, 18(1), पृ. 45-68।

अफ़ज़ल-ख़ान, एफ., 2018. *रोशनआरा बेगम: पाकिस्तान में शास्त्रीय संगीत, लिंग और मुस्लिम राष्ट्रवाद का प्रदर्शन.* द ड्रामा रिव्यू (TDR), 62(3), पृ. 120-138।

प्रेमचंद, एम., 2018. *येस्टर्डेज़ मेलोडीज़, टुडेज़ मेमोरीज़.* नई दिल्ली: हार्परकॉलीन्स इंडिया, पृ. 1-310।

अनंतारामन, जी., 2008. *बॉलीवुड मेलोडीज़: एक इतिहास.* नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स इंडिया, पृ. 1-360।

अनंतारामन, जी., 2008. *बॉलीवुड मेलोडीज़: हिंदी फ़िल्म गीत का इतिहास.* नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स इंडिया, पृ. 361-720।

कुमार, ए., 2018. *अनलाइकली "देवियाँ": सिल्वर स्क्रीन पर और उससे बाहर लिंग और कल्पना.* इंडिया एंड इट्स विज़ुअल कल्चर्स, 5(2), पृ. 90-115।

सर्वाधिकारी, ए., 2019. *ठुमरी के सांस्कृतिक क्षेत्र का पुनर्परिभाषण: किराना घराने का कोठे से मंच तक संक्रमण.* साउथ एशियन म्यूज़िक स्टडीज़, 12(1), पृ. 55-78।

अय्यर, सी., 2020. *ख़याल गायिकी के चयनित घरानों की शैलीगत सूक्ष्मताओं का विहंगम दृष्टिकोण.* संगीत गैलेक्सी जर्नल, 9(2), पृ. 30-52।

कापुरिया, आर., 2015. *अनकन्क्वरेबल नेमेसिस.* इकनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 50(40), पृ. 65-72।